पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन एवं मूल्यांकन
(Organization of Environmental Education Programmes and Evaluation)

एन०सी०ई०आर०टी० ने प्राथमिक तथा उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के लिए जिन कार्यक्रमों की प्रस्तुति की है, तथा जिनमें व्यावहारिक ज्ञान पर जोर दिया गया है। इसमें अधिगम कार्यक्रमों के पाँच चरण सुझाए गए हैं—(1) अवलोकन, (2) प्रश्न, (3) आओ पता लगाएँ, (4) क्रियाएँ तथा (5) हमने क्या सीखा? सीखा हुआ ज्ञान कहाँ तक सार्थक है? आदि।

(अ) उच्च-प्राथमिक स्तर अथवा माध्यमिक स्तर पर जो-जो कार्यक्रम तय किए गए हैं, प्रायोगिक कार्यक्रमों का क्षेत्र अधिक है। पाठों की आवश्यकता के अनुसार, विधियों और सहायक सामग्री आदि का चयन किया जा सकता है। उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के लिए चुने गए कुछ कार्यक्रम निम्नलिखित बिन्दुओं से सम्बन्धित हैं—भोजन, स्वास्थ्य, प्रकृति के साथ अनुकूलन, ऊर्जा के प्रकार, कृषि-क्रियाएँ, फसलें, उपयोगी पशु, उपयोगी पौधे, उन पर अन्तःनिर्भरता, जनसंख्या से उत्पन्न समस्याएँ, रोग और उनके निदान, कुपोषण आदि।

(ब) माध्यमिक स्तर के कार्यक्रमों में कुछ अधिक विस्तार है, लेकिन प्रायोगिक कार्य की गुंजाइश उनमें भी बराबर बनी रहती है। इसके प्रकारण इस प्रकार वर्गीकृत किए गए हैं—पारिस्थितिकी और उसकी समस्याएँ, प्राकृतिक संसाधन और उनका संरक्षण, फसलें, कृषि-क्रियाएँ, पशुपालन, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एवं उपचार, शिशु जन्म, जनन अंगों का परिचय, गर्भावस्था व सावधानियाँ, बच्चों को लगने वाले रोग, जनसंख्या का नियमन, कुपोषण, अल्प पोषण से होने वाले रोग, भोग्य पदार्थ एवं उनका रख-रखाव, वानिकी, सामाजिक वानिकी, नशेबाजी जैसी बुरी आदतें आदि।

हमारा मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं की नई पीढ़ी में संस्कार भरना है, ताकि वे अपने पर्यावरण के प्रति शुरू से ही सचेत और संवेदनशील बन सकें। प्रत्येक चरण पर उसे समाज से जोड़ना भी हमारा लक्ष्य है। पर्यावरण-शिक्षा के माध्यम से जीवन के शाश्वत मूल्यों का पालन सम्भव हो सकता है।

किताबी संस्कार अपने स्थान पर हैं और जीवन के विपुल अनुभव अपनी जगह पर हैं। पर्यावरण-शिक्षा के कई कार्यक्रम हो सकते हैं; जैसे—

(1) साहित्यिक कार्यक्रम—कविता, कहानी, वाद-विवाद, भाषण, विद्यालय, पत्रिका, विविध वेश-भूषा आदि।

Scanned by TapScanner

(2) **सांस्कृतिक कार्यक्रम**—अभिनय, मूकाभिनय नृत्य, समूह नृत्य, कठपुतली, [illegible], वेषभूषा आदि।

(3) **सामुदायिक सेवाकार्य**—एन०सी०सी०, एन०एस०एस०, स्काउट-गाइड कार्यक्रम [illegible] का आयोजन, प्रकृति-भ्रमण, वृक्षारोपण पौधशाला, प्रौढ़ शिक्षा आदि।

(4) **पर्यावरण परिषद् की स्थापना**—अन्य परिषदों का गठन, जैसे वाणिज्य परिषद्, [illegible] परिषद्, विज्ञान परिषद् आदि।

(5) **अन्य सह-शैक्षिक क्रियाएँ**—जैसे डाक टिकट संग्रह, चित्र एल्बम, स्टैंप मुद्रण का निर्माण, प्रदर्शनी का आयोजन आदि।

पर्यावरण शिक्षा के लिए चार्ट्स, मैप, ग्लोब, दृश्य-श्रव्य साधन, फिल्म प्रोजेक्टर, स्लाइड्स, टेपरिकॉर्डर, कैसेट्स, चलचित्र प्रदर्शन आदि का भी विशेष महत्व है। विधियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, पर गंतव्य स्थल एक ही रहेगा। मंजिल पर पहुँचने का मतलब है, बच्चों को पर्यावरण के प्रति सजग और संवेदनशील बनाना। अच्छी प्रकार से संवेदित और संस्कारित पीढ़ी के हाथों में ही निश्चित होकर भविष्य की विरासत दी जा सकती है और आशा की जा सकती है कि ऐसी पीढ़ी उस विरासत की रक्षा और संवर्धन भी कर सकेगी। अतः उपरोक्त कार्यक्रमों की विशेष भूमिका रही है।

पर्यावरण शिक्षा हेतु प्रौढ़-शिक्षा की संस्थाओं की भूमिका
(The Role of Adult Education Agencies for Environmental Education)

पर्यावरण शिक्षा हेतु प्रौढ़-शिक्षा का पंच बिन्दु कार्यक्रम उसके उद्देश्य का स्पष्ट संकेत देता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब प्रौढ़ शिक्षा की ऐसी संस्थाओं को स्थापित किया जाये, जो प्रौढ़ों की चेष्टाओं एवं अभिलाषाओं को स्वस्थ दिशाओं में मोड़कर, उनको विकसित मानव प्राणियों का ऐसा रूप प्रदान करें, जिससे उनकी और समाज का हित हो। इस विचार को अपना मार्ग-प्रदर्शक मानकर, प्रौढ़-शिक्षा के कार्यकर्त्ताओं ने निम्नलिखित प्रकार की संस्थाओं का आयोजन किया है—

(1) **साक्षरता कक्षाएँ** (Literacy Classes)—इन कक्षाओं का संचालन मुख्यतः "सामुदायिक योजनाओं" (Community Projects) द्वारा किया जाता है। निरक्षरता के उन्मूलन में इनका योगदान प्रशासनीय है।

(2) **सामुदायिक केन्द्र** (Community Centres)—इन केन्द्रों में मनोरंजन, सूचना-प्राप्ति और विचार-विमर्श गोष्ठियों की व्यवस्था है। कुछ केन्द्रों में वयस्कों को विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्पों की शिक्षा ग्रहण करने की सुविधाएँ भी प्रदान की जाती हैं।

(3) **युवक गोष्ठियाँ** (Youth Clubs)—ये गोष्ठियाँ साधारणतः युवकों के लिए खेल-कूद की व्यवस्था करती हैं। इनका शैक्षिक महत्व इस बात में है कि ये युवकों को सामूहिक जीवन की नवीन विधियों में प्रशिक्षण देती हैं।

Scanned by TapScanner

(4) **महिला समितियाँ** (Mahila Samitees)—इन समितियों में ग्रामीण स्त्रियों के निम्नलिखित कार्यों का आयोजन किया जाता है—स्त्री-साक्षरता, गीत और भजन, खेल और मनोरंजन, धार्मिक और सामाजिक समारोह, बाल-कल्याण और पारिवारिक कार्यों पर व्याख्यान, सिलाई, कढ़ाई और अन्य शिल्पों की शिक्षा, संतुलित आहार, सामान्य रोगों और उनके उपचारों की शिक्षा, इत्यादि।

इसके अन्तर्गत अनौपचारिक शिक्षा संस्थायें भी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रही हैं। मुख्य संस्थाओं का उल्लेख यहाँ पर दिया गया है—

(1) **विद्यालय की भूमिका**—प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रात्रि-कक्षाओं के माध्यम से प्रौढ़-शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

(2) **महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की भूमिका**—विश्वविद्यालयों दूरवर्ती-शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। इन संस्थाओं में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र भी स्थापित किये गये हैं। इसलिए राष्ट्रीय सेवा योजना शिविरों तथा राष्ट्रीय कैडिट कोर (N.C.C.) कार्यक्रमों से प्रौढ़-शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रसार हुआ है। इन्हीं के माध्यमों से पर्यावरण-सचेतना का विकास भी किया जा रहा है। स्वच्छता, स्वास्थ्य, पेड़ लगाना, सड़क बनवाना, श्रमदान कार्यक्रमों, खाद तथा गोबर के गड्ढे खोदने पर अधिक बल दिया जाता है।

(3) **दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग**—दृश्य-श्रव्य शिक्षा निदेशालय ने प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

(4) **बहुमाध्यम के उपयोग**—रेडियो, दूरदर्शन पर प्रौढ़-शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है, जो सबसे प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुआ है। कार्यक्रमों के प्रसारण में महत्वपूर्ण योगदान है।

उपरोक्त संस्थाओं तथा अभिक्रमों में प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'पर्यावरण-शिक्षा' को भी पाठ्यवस्तु के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए। आंशिक रूप में तथा परोक्ष रूप में प्रौढ़ शिक्षा के अधिकांश कार्यक्रम 'पर्यावरण सचेतना से सम्बन्धित हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा पर्यावरण सचेतना के विकास के साथ उनमें कौशल तथा व्यावहारिक कार्यों का सम्पादन किया जा सकता है। पौधे लगाकर, गाँव को साफ रखकर, कूड़े-कचड़े को गड्ढे में डालकर गाँव/स्थानीय पर्यावरण में गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रमों का इस प्रकार से संचालन करने हेतु राष्ट्रीय पर्यावरण अपिलीय प्राधिकरण अधिनियम 1957 (National Environmental Appellate Authority Act. 1997)

इसी दिशा में सरकार द्वारा निम्नलिखित पर्यावरणीय दिवस मनाए जाते हैं—

- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (National Science Day 28 Feb)
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) 8 मार्च।
- विश्ववन्य दिवस (World Forestry Day) 21 मार्च।

Scanned by TapScanner

- विश्व जल दिवस (World Water Day) 22 मार्च।
- विश्व वायुमण्डलीय दिवस (World Meleorological Day) 23 मार्च।
- विश्व स्वास्थ्य दिवस (World Health Day) 7 अप्रैल।
- पृथ्वी दिवस (Earth Day) 22 अप्रैल।
- धूम्रपान तथा तम्बाकू रहित दिन (Anti Tobacco Day) 21 मई।
- विश्व पर्यावरण दिवस (World Environmental Day) 5 जून।
- अन्तर्राष्ट्रीय मापक द्रव्य विरोध दिवस (International Day for Drugs) 26 जून।
- विश्व जनसंख्या दिवस (World Population Day) 11 जुलाई।
- हिरोशिमा दिवस (Hiroshima Day) 6 अगस्त।
- नागाशाकी दिवस (Nagashaki Day) 9 अगस्त।
- विश्व साक्षरता दिवस (World Literacy Day) 8 सितम्बर।
- विश्व ओजोन दिवस (World Ozone Day) 16 सितम्बर।
- विश्व पर्यटन दिवस (World Tourism Day) 27 दिसम्बर।
- विश्व अधिवास दिवस (World Habitat Day) 30 अक्टूबर।
- विश्व पशु कल्याण दिवस (World Animal Day) 4 अक्टूबर।
- दिश्व एड्स दिवस (World Aids Day) 1 दिसम्बर।
- मानव अधिकार दिवस (Human Rights Day) 10 दिसम्बर।
- विश्व खाद्य दिवस (World Food Day) 16 अक्टूबर।
- किसान दिवस (Farmer Day) 23 दिसम्बर।
- संयुक्त राष्ट्र दिवस (U.N. Day) 24 दिसम्बर।

पारिस्थितिकी-पर्यावरणीय जन-जागृति कार्यक्रम

पारिस्थितिकी विकास शिविर (Eco Development Camp)—शिक्षा शिविर, चिकित्सा शिविर, परिवार नियोजन, रक्तदान शिविर, पोलियो शिविरों की भाँति पर्यावरण के विकास तथा संरक्षण एवं सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी शिविरों का आयोजन किया जा सकता है। इसी प्रकार की गतिविधि से पर्यावरणीय घटकों, घटनाओं तथा समस्याओं को चित्रों, फिल्म्स तथा चार्टों द्वारा प्रत्यक्षीकरण कराया जा सकता है। भारत में इस प्रकार के शिविरों की योजना सरकार ने सन् 1982-83 बनाई। आज सरकारी संस्थाओं, स्वयं सेवा संस्थाओं के द्वारा इनका आयोजन किया जा रहा है।

युवा समाज के व्यक्ति भौतिक सुधारों में अपना सक्रिय योगदान प्रदान कर सकते हैं। उनमें मानसिक जागरूकता पैदा की जा सकती है। पारिस्थितिकी विकास शिविर के उद्देश्य—

— छात्र-छात्राओं तथा समाज के व्यक्तियों को पर्यावरण तथा पर्यावरणीय सिद्धान्तों तथा व्यावहारिक तत्वों का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।

Scanned by TapScanner

- पर्यावरणीय घटकों की पारस्परिक सम्बन्धों तथा उनकी अन्तःक्रिया का ज्ञान देना।
- पर्यावरणीय जैविक तथा अजैविक तत्वों के असंतुलित स्थिति के परिणाम से अवगत कराना।
- असन्तुलन के कारणों की व्याख्या करना।
- विभिन्न प्रदूषणों तथा उनसे उत्पन्न होने वाले रोगों तथा स्वास्थ्य सुरक्षा पर प्रकाश डालना।
- जन साधारण के पर्यावरण संरक्षण की जानकारी तथा वैकल्पिक व्यवस्थाओं से अवगत कराकर संसाधनों के उचित प्रयोग के लिए प्रेरित करना।
- मनुष्य में खान-पान, रहन-सहन तथा क्रिया-कलाप प्रकृति के अनुकूल हो।
- इस प्रकार के आयोजनों से व्यक्तियों में प्रकृति प्रेम तथा राष्ट्रीय भावना, तथा एकता की भावना उत्पन्न करना तथा शिविरों का संचालन करना।

शिविरों के संचालन का प्रारूप

- 50 युवक युवतियाँ सम्भागी हो सकते हैं।
- 5 से 7 दिन की अवधि हो सकती है।
- स्थान के चयन पर आवास तथा भोजन व्यवस्था आने-जाने के साधनों की सुविधा होनी चाहिए।
- कार्यक्रम पूर्ण निर्धारित, नियोजित तथा उसी अवधि में पूरा होने वाला होना चाहिए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programme)—प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनसाधारण को क्रियात्मक ज्ञान दिया जा सकता है। प्रत्येक पक्ष को **'करके सीखो'** द्वारा समझाया जा सकता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पंचायत स्तर से लेकर राज्य स्तर तक संचालित किये जा सकते हैं। दो तीन दिन की अवधि के प्रशिक्षण शिविर लगाये जा सकते हैं। सरकारी विभागों को अपने-अपने विभाग में बनने वाली योजनाओं से अवगत कराना चाहिए। पर्यावरण सुधार के लिए नियमित कार्यों के बारे में ज्ञान दिया जाये।

फिल्म—फिल्म के माध्यम से छात्र तथा जनसाधारण श्रव्य तथा दृश्य दोनों ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग कर स्थूल ज्ञान प्राप्त कर लेता है। जिन बातों को हम बौद्धिक चिन्तन द्वारा सीखते हैं उसे वह प्रत्यक्ष रूप से देख सीख सकता है।

प्रदर्शनियाँ—पर्यावरण के प्रति जनजागरण में विभिन्न पर्यावरण बिन्दुओं पर प्रदर्शनियों का आयोजन भी अधिक लाभकारी होगा। परन्तु इसमें व्यवस्था करने में तथा धन का अधिक प्रयोग होता है। एक स्थान से दूसरे स्थानों पर प्रदर्शनी लगाने में स्थान का चयन ऐसा हो जहाँ सभी प्रकार की सुविधाएँ हों। इस कार्यक्रम में सभी बिन्दुओं पर चित्र, मॉडल, फोटोग्राफ्स, बोलने वाले चित्रों आदि का प्रयोग करते हैं।

सेमीनार तथा कार्यगोष्ठियों द्वारा भी जनजागरण में सहयोग मिलता है। समस्यात्मक बिन्दुओं

Scanned by TapScanner